प्रकाशन तिथि : 01 फरवरी, 2021
प्रेषण तिथि : 04 फरवरी, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 22 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

देशभर में उत्साह व श्रद्धा से मनाई संस्थापक श्री की 97वीं जयन्ती

25 जनवरी को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 97वीं जयन्ती स्वयंसेवकों तथा समाजबंधुओं द्वारा उत्साह व श्रद्धापूर्वक मनाई गई। जयन्ती की पूर्व संध्या पर तथा जयन्ती के अगले दिन भी अनेक स्थानों पर जयन्ती कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

मुख्य जयन्ती कार्यक्रम वर्चुअल स्वरूप में मनाया गया जिसके अंतर्गत 25 जनवरी को प्रातः सात बजे संघ के यूट्यूब चैनल तथा फेसबुक पेज पर जयन्ती कार्यक्रम का प्रसारण हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने पूज्य तनसिंह जी के प्रति अपनी श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि '25 जनवरी 1924 के दिन भारतवर्ष के सीमांत प्रदेश में ठाकुर बलवंत सिंह जी के घर माता श्रीमती मोती कंवर जी सोढ़ी जी की कोख से पूज्य तनसिंह जी का जन्म हुआ। यह 97 वर्ष पूर्व की घटना है। आज उनकी जयंती भारतवर्ष के विभिन्न शहरों में, गांवों में अनेकों जगह पर हर्षोल्लास के साथ मनाई जा रही है। जीवन के कुल साढ़े 55 वर्ष वह इस धरती पर रहे। 7 दिसंबर 1979 को उन्होंने शरीर छोड़ा और उस दिन से उनकी पुण्यतिथि भी मनाई जाती रही है। उनका स्मरण क्यों किया जा रहा है यह महत्वपूर्ण बात है। उन्होंने अपने परिवार के लिए क्या किया, अपने गांव के लिए क्या किया, यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने मानव जाति को क्या दिया, इस राष्ट्र को क्या दिया, समाज को क्या दिया? श्री क्षत्रिय युवक संघ का नाम लेते ही प्रत्येक व्यक्ति के जेहन में यह बात आती है कि वो केवल राजपूतों के थे। यह सही आकलन नहीं होगा। निश्चित ही, आज राजपूत कहे जाने वाले घर में उन्होंने जन्म लिया। लेकिन उनके गुण और कर्म कैसे थे, इस बात को समझना आवश्यक है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना के साथ क्षत्रिय क्या होता है, क्षत्रिय का कर्त्तव्य क्या होता है यह अनेक शास्त्रों को पढ़कर उन्होंने सार निकाला। जो क्षय से त्राण कराये, जो दुखों को दूर करे, जो विष का विनाश करे, अमृत की रक्षा करे - वो क्षत्रिय है। पूज्य तनसिंह जी ने बहुत सारी क्षमताओ को समेटे हुए, अपने लिए कुछ ना करके, अन्यों के लिए जीने वाले क्षत्रिय का जीवन जीया। आज हम तन सिंह जी का स्मरण करें, साथ ही उन प्रणेताओं को भी स्मरण करें, जो तन सिंह जी के साथ में रह कर उनके कार्य की नींव में पत्थर बने। हम भी कंगूरा बनने की कोशिश ना करें बल्कि नींव में रहने वाले पत्थर बनें।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'रक्तदान कर दी श्रद्धांजलि'

पूज्य श्री तनसिंह जयन्ती की पूर्व संध्या पर 24 जनवरी को संघशक्ति, जयपुर में प्रताप युवा शक्ति द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें स्वयंसेवकों व सहयोगियों द्वारा सैंकड़ों यूनिट रक्तदान किया गया। इस दौरान माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी, परिवहन मंत्री प्रताप सिंह जी खाचरियावास, विधायक नरपत सिंह जी राजवी, बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष धर्मेंद्रसिंह जी राठौड़ आदि विशिष्ट लोग भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान यथार्थ गीता तथा हेलमेट का वितरण किया गया तथा सड़क सुरक्षा का संदेश भी दिया गया। इसी प्रकार पुणे में भी प्रताप युवा शक्ति द्वारा जयन्ती के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें युवाओं द्वारा 107 यूनिट रक्तदान किया गया।

(श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय बैठक संपन्न)

चुनौतियों से संघर्ष जारी रखें : सरवड़ी

गीता में वर्णित गुणों के अनुसार क्षत्रिय का एक गुण 'युद्धेचाप्य पलायनम्' है जिसका अर्थ है युद्ध से पलायन न करना। युद्ध का अर्थ अपने लक्ष्य की प्राप्ति में आने वाली चुनौतियों से संघर्ष करना है, उनसे घबराए बिना लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग पर निरन्तर क्रियाशील रहना है। 24 जनवरी को जयपुर में संघशक्ति के निकट स्थित 'सरोवर गार्डन' में आयोजित श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय बैठक को संबोधित करते हुए माननीय महावीरसिंह सरवड़ी जी ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि आपने आज जो लक्ष्य तय किए हैं उनकी ओर धैर्यपूर्वक अग्रसर होवें एवं मार्ग में आने वाली चुनौतियों से घबराएं नहीं, रुके नहीं। परिणाम क्या प्रकट होता है इसकी चिंता करने की अपेक्षा हम क्या श्रेष्ठतम प्रयास कर सकते हैं उस पर ध्यान केन्द्रित रखें तथा उसे नियमित और नियमित करते रहें। इससे पूर्व प्रातः 9 बजे से अपराह्न 4 बजे तक दो सत्रों में आयोजित बैठक में इस वर्ष के लिए बनी केन्द्रीय समिति के अलावा प्रत्येक जिले से सक्रिय सहयोगी उपस्थित हुए। प्रार्थना एवं परिचय के साथ प्रारंभ हुई बैठक में सर्वप्रथम नई केन्द्रीय समिति के कार्य विभाजन की जानकारी दी गई। तत्पश्चात नई

जिला टीमों के गठन को लेकर चर्चा की गई। प्रत्येक जिले में पंचायती राज प्रतिनिधियों के सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया गया एवं उसके बाद प्रदेश स्तर पर एक ऐसा सम्मेलन आयोजित करने को लेकर चर्चा की गई। आर्थिक आधार पर आरक्षण की विसंगतियों को लेकर चर्चा की गई एवं इसके लिए समाज कल्याण विभाग स्तर पर, राज्य सरकार के स्तर पर एवं केन्द्र सरकार के स्तर पर सुलझाने वाली विसंगतियों का वर्गीकरण कर तदनुसार कार्य करने की योजना बनाई गई। राजस्थान में सरकारी नौकरियों में राजस्थान के मूल निवासियों को वरीयता से राज्य के सामान्य वर्ग को हो रही हानि को लेकर चर्चा की गई एवं इसके लिए सरकार तक प्रभावी तरीके से विषय को पहुंचाने के उपायों पर विचार किया गया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के वर्तमान क्षेत्र में सहयोगियों के बीच घनत्व बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की गई एवं नए क्षेत्रों में सहयोगी ढूंढकर काम के विस्तार की संभावनाओं पर चर्चा की गई। यह वर्ष श्री क्षत्रिय युवक संघ का हीरक जयंती वर्ष है और संघ इस पूरे वर्ष विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित कर रहा है, संघ की स्थानीय टीम के संपर्क में रहकर उसमें किस प्रकार सहयोगी हो सकते हैं इसको लेकर भी चर्चा की गई एवं संभावित कामों के बारे में जानकारी दी गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में उल्लेखित बीकानेर के पृथ्वीराज और महाराजा गंगासिंह के संदर्भ में।

पृथ्वीराज राव कल्याणमल के पुत्र थे। वीर होने के साथ ही भक्ति और साहित्य के क्षेत्र में भी उनका स्थान उच्च है। शाही सेना में रहते हुए काबुल और अहमदनगर की लड़ाई में अपने युद्ध कौशल का परिचय दिया। उनकी वीरता का कायल होकर अकबर ने उन्हें गागरोन गढ़ की जागीर दी थी। शाही सेवा में होने पर भी उनमें जातीय भाव उच्च कोटि का था। स्वतंत्रता प्रेमी महाराणा प्रताप में उनकी असीम श्रद्धा थी जिसे उन्होंने एक गीत द्वारा प्रकट किया है। उनके द्वारा रचित 'वेलि क्रिसन रक्मणी री' डिंगल भाषा की श्रेष्ठ रचना है। वे विष्णु के परम भक्त थे। पृथ्वीराज के संबंध में अनेक चमत्कार प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि जब वो अपनी रचना 'वेलि क्रिसन रुक्मणी री' को द्वारिका में श्रीकृष्ण के चरणों में अर्पित करने जा रहे थे, तो मार्ग में द्वारिकानाथ ने स्वयं वैश्य के रूप में मिलकर उस पुस्तक को उनके मुख से सुना था। उनके समकालीन कविवर नाभाजी ने अपनी 'भक्त माल' रचना में उनको स्थान दिया है। अकबर के पूछने पर पृथ्वीराज ने छः मास पूर्व ही बता दिया कि मेरी मृत्यु मथुरा के विश्राम घाट पर होगी। पृथ्वीराज के कथन को असत्य सिद्ध करने के लिए अकबर ने राज कार्य का बहाना लेकर उन्हें अटक पार भेज दिया। कुछ समय बीत जाने पर एक भील एक मनुष्य की भाषा में बोलने वाला चकवा-चकवी का जोड़ा अकबर को भेंट करने के लिए लाया? जिसे देख अकबर बड़ा आश्चर्य चकित हुआ। अकबर को प्रसन्न करने के लिए खानखाना ने दोहे का एक चरण पढ़ा-

सज्जन बारूं कोदधां या दुर्जन की भेंट।

परन्तु इस दोहे को दूसरा चरण बहुत प्रयास के बाद भी कोई बना नहीं पाया। तब अकबर ने पहला चरण लिखकर पृथ्वीराज को बुलाने का संदेश भेजा। अभी पृथ्वीराज की बताई छह माह की अवधि में 15 दिन शेष थे। ठीक पन्द्रहवें दिन पृथ्वीराज मथुरा पहुंचे, जहां दोहे का दूसरा चरण बना कर अकबर के पास भिजवा विश्राम घाट पर प्राण त्याग दिए। दूसरा चरण इस प्रकार था-

रजनी का मेला किया, वेह (विधि) के अच्छर भेंट।

महाराजा गंगासिंह अपने बड़े भाई महाराजा डूंगरसिंह के स्वर्गवास के बाद मात्र सात वर्ष की आयु में वि.सं. 1944 को बीकानेर के शासक बने। बीकानेर के आधुनिकीकरण का सारा श्रेय महाराजा गंगासिंह जी को जाता है। प्रजा के कल्याण के लिए उन्होंने शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, कानून व्यवस्था में व्यापक सुधार कार्य किया, रेलवे लाइन का निर्माण करवाया। उन्होंने गंगा रिसाला (सेना) का गठन किया और चीन का युद्ध और प्रथम विश्व युद्ध में भाग लेकर अपनी वीरता और सैन्य संचालन के कौशल का प्रदर्शन किया। वि.सं. 1956 के भयंकर अकाल में प्रजा के लिए अनेक राहत कार्य प्रारम्भ किए। गजनेर की झील खुदवाई गई, अनेक स्थानों पर अन्न क्षेत्र खोले गए। गांवों तक गंगा रिसाला द्वारा अनाज पहुंचाया गया। स्थान-स्थान पर पानी उपलब्ध करवाया गया। महाराजा स्वयं सम्पूर्ण राज्य में घूम कर प्रजा के मिलकर उन्हें सांत्वना देते, उनका मनोबल बढ़ाते और राहत कार्य का जायजा लेते। बीकानेर राज्य में नाम मात्र की वर्षा होती थी, मरुस्थलीय भू-भाग था, छप्पन के अकाल में राज्य की जनता के कष्ट को देखकर महाराजा गंगासिंह द्वारा लगातार एक ही विषय पर चिन्तन चलता रहा कि बीकानेर राज्य में जल का अभाव कैसे दूर हो। अंत में उन्होंने सतलज नदी से नहर लाने का संकल्प ले लिया। महाराजा की इस योजना का पंजाब सरकार द्वारा और बहावलपुर द्वारा विरोध किया गया, परन्तु महाराजा के निरन्तर प्रयासों के बाद गवर्नर ने इसकी स्वीकृति दे दी। सन् 1925 में फिरोजपुर में हैड वर्क्स की नींव रखी गई और सन् 1927 में नहर का कार्य पूर्ण हुआ। महाराजा गंगासिंह जी द्वारा बीस वर्षों तक के लगातार कार्य का परिणाम थी यह नहर। नहर का नाम गंग नहर रखा गया। नहर के आ जाने से राज्य का बंजर उत्तरी भाग हरा-भरा होकर धन-धान्य से पूर्ण हुआ जो आज राजस्थान का प्रमुख अन्न भण्डार है। राज्य के किसानों और जन साधारण ने महाराजा के इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उन्हें 'भागीरथ' की उपमा प्रदान कर अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

बीकानेर राज्य का इतिहास - गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
बीकानेर राज्य का संक्षिप्त इतिहास - दीनानाथ खत्री

- खींवसिंह सुल्ताना

शिक्षक बनने का एक स्वर्णिम अवसर-रीट 2021

वर्तमान में राजस्थान में रीट 2021 के लिए आवेदन प्रारंभ हो चुके हैं। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा एनसीटीई की गाइडलाइन के अनुसार यह परीक्षा सम्पन्न करवायी जाएगी जिसका उद्देश्य राजस्थान राज्य के लिए अभ्यर्थी की तृतीय श्रेणी शिक्षक पद के लिए पात्रता सुनिश्चित करना है। रीट की परीक्षा की तिथि बोर्ड ने 25 अप्रैल तय की है। तीन माह का यह समय अभ्यर्थियों के लिए एक साधना काल हैं। इस काल के विभिन्न आयामों से गुजरता हुआ अभ्यर्थी अच्छे अध्ययन के बावजूद तैयारी की सुव्यवस्थित एवं सम्यक रणनीति के अभाव में पथ विचलित हो जाता है। तैयारी की सम्यक रणनीति के लिए निम्नलिखित बिंदु रीट के अभ्यर्थियों के लिए कारगार एवं महत्त्वपूर्ण साबित हो सकते हैं।

अप्रेल तक पर्याप्त समय : यदि रीट के पाठयक्रम का पूर्णत विश्लेषण किया जाए तो इस पाठ्यक्रम के अनुरुप रीट परीक्षा की तैयारी के लिए एक नये अभ्यर्थी के लिए अप्रेल तक का समय पर्याप्त हैं क्योंकि परीक्षा से पहले के महीनो में पढ़ी जाने वाली अध्ययन सामग्री वर्ष भर पहले पढ़ी जाने वाली अध्ययन सामग्री की तुलना में ज्यादा याद रहती हैं। यदि इससे भी अधिक समय आप रीट की तैयारी को दे पा रहे हैं तो यह निरन्तरता आपको मानसिक रूप से मजबूत बनाकर आपकी तैयारी को ओर अधिक सुलभ बनाएगी।

पाठ्यक्रम पर रखै पैनी नजर : पाठ्यक्रम किसी भी परीक्षा पद्धति को पास करने का प्राथमिक आयाम होता है जो योद्धा के पास के शस्त्र की तरह अभ्यर्थी की सहायता करता है। रीट के आयोजन की कार्यकारी एजेंसी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा पूर्व में वर्ष 2011 एवं 2012 के आरटेट और 2015 एवं 2018 के रीट के प्रश्न-पत्र पूर्णतः पाठ्यक्रम केन्द्रित रहे हैं। अतः पाठ्यक्रम के पेज को हमेशा अपनी टेबल पर रखें एवं उसके अनुरूप ही प्रत्येक विषय को तैयार करें।

कोचिंग डायरेक्शन देती है, सलेक्शन नहीं : वर्तमान में प्रतियोगी परीक्षाओ की चयन पद्धति ने कई कोचिंग सेंटर्स को उत्पन्न किया है। यह शाश्वत सत्य है कि कोई भी कोचिंग संस्थान किसी अभ्यर्थी का चयन नहीं करवाती हैं बल्कि एक अच्छी कोचिंग अभ्यर्थी को तैयारी के लिए सम्यक रास्ते की ओर अग्रसर करती हैं। वर्तमान में समय की कमी को मध्यनजर रखते हुए सेल्फ स्टडी पर फोकस करें क्योकि सेल्फ स्टडी ही चयन का सर्वोत्तम आधार है। अतिआवश्यक होने पर जिसमें जरूरत हो उसी विषय की कोचिंग ले। वर्तमान में प्रचलित आनलाइन कोचिंग समय एवं धन की बचत को देखते हुए कोचिंग का अच्छा विकल्प है।

पाठ्यक्रम में हुए आंशिक बदलाव को लेकर डरें नहीं : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विज्ञप्ति जारी करने के तीन चार दिवस के भीतर रीट के पाठ्यक्रम में आंशिक बदलाव किया है जो पूरे पाठ्यक्रम का दस से पन्द्रह फीसदी हैं। बदले हुए पाठ्यक्रम वाले बिन्दूओ को पढ़ने के लिए अपने स्वविवेक से अपनी दैनिक अध्ययन दिनचर्या में शामिल करके उन्हे तैयार किया जा सकता है। परिवर्तित पाठ्यक्रम मे राजस्थान से संबंधित जो बिन्दू जोड़े गए हैं उनको कम समय में अच्छे से तैयार करने के लिए वर्तमान में कक्षा दस में प्रचलित माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पुस्तक 'राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति' सर्वाधिक उपयोगी रहेगी।

शिक्षा मनोविज्ञान को लेकर रहे सहज : रीट 2018 में विशेषकर लेवल प्रथम में बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र के पेपर का स्तर क्लिष्ट रहने से वर्तमान में तैयारी करने वाले अभ्यर्थी स्वयं को इस विषय के प्रति असहज महसूस करते हैं जो उचित नहीं है। पिछली रीट के पेपर को आधार बनाकर कोई भी विषय विशेषज्ञ या सफल अभ्यर्थी खुलकर आपको इस विषय के लिए कोई प्रामाणिक गाइड सजेस्ट नहीं कर सकता। अतः अपनी तैयारी का अधिकांश समय शिक्षा मनोविज्ञान पर व्यर्थ ना करके अन्य विषयों के अनुरूप ही समय देकर जिस भी पुस्तक से अब तक आपने शिक्षा मनोविज्ञान तैयार की हैं उसी का बारम्बार रिविजन करें।

अध्ययन सामग्री में अपनाएं Minnimum meterial Meximam Revision का फॉर्मूला

रीट का प्रश्न-पत्र ओबजेक्टिव होता है। जिन प्रश्न पत्रों की पद्धति ओबजेक्टिव होती है वहां न्यूनतम अध्ययन सामग्री से अधिकतम दोहरान का फॉर्मूला ज्यादा उपयोगी साबित होता है। अत्यधिक पुस्तकों का अध्ययन आरएएस या आईएएस मुख्य परीक्षा के लिए अनुकूल हो सकता है क्योंकि वहा अभ्यर्थी को संक्षिप्त में सारगर्भित लिखना होता हैं लेकिन रीट जैसी परीक्षाओं में नहीं। अतः पाठ्यक्रम को केन्द्र में रखकर स्वविवेक से विषयवार एक-एक पुस्तक का चयन करके Minnimum meterial Meximam Revision के मूल मंत्र को अपनाते हुए तैयारी करें। सुविधार्थ रीट की तैयारी लिए कुछ पुस्तकों की सुझाव सूची निम्नानुसार है।

भाषा प्रथम सामान्य हिंदी

-माशिबो द्वारा प्रकाशित कक्षा 9-12 की सामान्य हिन्दी पुस्तक
सारांश सुमनलता यादव

भाषा द्वितीय संस्कृत - इनमे से कोई एक
- माशिबो की संस्कृत पुस्तको के अंत में दी गयी व्याकरण /साफल्यम- डॉ.लोकेश शर्मा। **गणित :** मथुरिया / आर.एस.अग्रवाल

(शेष पृष्ठ 7 पर)

काणेटी व मोरचंद में शिविर संपन्न

गुजरात में 23 से 25 जनवरी तक संघ के दो तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए। मध्य गुजरात संभाग के काणेटी में हुए शिविर में काणेटी, साणंद, मोडासर, पिंपन, बकराणा, रासम, बोयल, अहमदाबाद, गांधीनगर आदि स्थानों से शिविरार्थी पहुंचे। शिविर का संचालन दिग्विजयसिंह पलवाड़ा ने किया एवं संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी भी उपस्थित रहे। गोहिलवाड़ संभाग के मोरचंद में इसी अवधि में हुए शिविर का संचालन छनुभा पच्छेगाम ने किया एवं व्यवस्था मोरचंद शाखा ने की। दोनों ही शिविरों में पूज्य तनसिंह जी की जयंती मनाई गई एवं हीरक जयंती वर्ष की कार्य योजना बनाई गई।

काणेटी में पारिवारिक स्नेहमिलन

संघ के मध्य गुजरात संभाग में हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रमों की शुरुआत 17 जनवरी को पारिवारिक स्नेहमिलन से हुई। प्रातः 9 बजे से सायं तक चले इस स्नेहमिलन में राजपूत समाज एवं संघ के प्रति हमारा दायित्व विषय पर चर्चा हुई। वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने कहा कि इस वर्ष हम संकल्प के साथ काम करें और हमारे संभाग के हर क्षेत्र में पूज्य तनसिंह जी के विचारों को पहुंचाएं। हमारा यह संकल्प इस वर्ष हमारे क्षेत्र में संघ को नया आयाम देवे। स्नेहमिलन में बालिकाओं को पृथक से कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसे जागृति बा हरदासका बास ने लिया। बनासकांठा के मेजरपुरा में भी इसी दिन स्नेहमिलन हुआ।

हीरक जयंती की पूर्व तैयारी में संभागीय बैठकों की श्रृंखला प्रारंभ

बाड़मेर, जयपुर, जोधपुर, जालोर, बीकानेर, जैसलमेर, बालोतरा, पोकरण व नागौर संभागों की बैठकें सम्पन्न

आलोक आश्रम बाड़मेर में 9-10 जनवरी को माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में आयोजित केंद्रीय बैठक में लिए गए निर्णय की अनुपालना में हीरक जयंती वर्ष के अंतर्गत संभागीय बैठकों व कार्यशालाओं की श्रृंखला के प्रथम चरण के अंतर्गत 16-17 जनवरी को विभिन्न संभागों की बैठकें सम्पन्न हुई। इन बैठकों के दौरान केंद्र द्वारा हीरक जयन्ती की तैयारी हेतु दिए गए दिशानिदेर्शों पर बिंदुवार चर्चा हुई, वर्ष भर के लिए कार्ययोजना तैयार की गई तथा सभी स्वयंसेवकों को हीरक जयन्ती से संबंधित विभिन्न दायित्व व लक्ष्य सौंपे गए। 22 दिसंबर 2021 को जयपुर में आयोजित होने वाले मुख्य कार्यक्रम में संभाग के स्वयंसेवकों की सहभागिता, हीरक जयन्ती की पूर्व तैयारी में 75 बड़े कार्यक्रमों का आयोजन जिनमें न्यूनतम 1000 प्रति कार्यक्रम की संख्या हो, हीरक जयन्ती विशेषांक हेतु सामग्री जुटाने, संघ साहित्य को घर-घर पहुंचाने आदि विषयों पर बैठकों के दौरान विस्तृत चर्चा कर योजना बनाई गई। संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत संभाग के उन स्थानों पर जहां पर पहले संघ के शिविर आदि आयोजित हो चुके हैं, वहां पर सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित करने, संघदर्शन को समाज में प्रसारित करने हेतु विचार गोष्ठियों के आयोजन, संघ कार्य के नए क्षेत्रों में विस्तार, सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग, पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती पर कार्यक्रमों का आयोजन, साप्ताहिक वर्चुअल उद्बोधनों में अधिक से अधिक सहभागिता, चयनित व्यक्तियों के चार दिवसीय शिविरों का आयोजन, भौतिक शाखाओं के प्रारम्भ, संघशक्ति-पथप्रेरक हेतु सदस्यता अभियान आदि बिंदुओं पर भी चर्चा करके कार्ययोजना निश्चित की गई। बाड़मेर संभाग की दो दिवसीय कार्यशाला आलोक आश्रम में माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में 16-17 जनवरी को आयोजित हुई। हीरक जयन्ती की तैयारी हेतु प्रकाश सिंह भुरटिया को हीरक जयन्ती कार्यक्रम समन्वयक, राम सिंह माडपुरा को भवन प्रभारी, हीर सिंह सनाऊ को लेखा प्रभारी तथा स्वरूप सिंह भाडली को मीडिया प्रभारी का दायित्व दिया गया। बैठक के दौरान वरिष्ठ स्वयंसेवक देवी सिंह माडपुरा तथा संभाग प्रमुख कृष्णसिंह रानीगांव भी उपस्थित रहे। इसी अवधि में जयपुर संभाग की भी दो दिवसीय बैठक संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास के सान्निध्य में 'संघशक्ति' में सम्पन्न हुई। बैठक के दौरान संभाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर ने हीरक जयन्ती से संबंधित विभिन्न दायित्व स्वयंसेवकों को सौंपे। पूज्य तनसिंह जी की जयंती के उपलक्ष्य में संघशक्ति में 24 जनवरी को आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर तथा 25 जनवरी को आयोजित होने वाले जयन्ती कार्यक्रम की तैयारियों पर भी चर्चा की गई। रविवार की शाखा के दौरान माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी का सान्निध्य भी बैठक में उपस्थित स्वयंसेवकों को प्राप्त हुआ। केंद्रीय कार्यकारी श्री गजेंद्र सिंह आऊ भी बैठक में उपस्थित रहे। जयपुर के अतिरिक्त अलवर तथा दिल्ली प्रान्त के स्वयंसेवकों ने भी बैठक में भाग लिया। 16-17 जनवरी को ही जोधपुर संभाग की संभागीय बैठक भी 'तनायन', जोधपुर में सम्पन्न हुई जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा तथा संभाग प्रमुख चन्द्रवीर सिंह देणोक उपस्थित रहे। बैठक में संभाग के सभी प्रांतों से लगभग 55 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। बैठक के दौरान चंद्रवीर सिंह देणोक व लूणकरण सिंह तेना को हीरक जयन्ती कार्यक्रम समन्वयक, उम्मेदसिंह सेतरावा को विशेषांक हेतु लेख जुटाने, मूल सिंह बेतिणा, पदम सिंह ओसियां व चैन सिंह साथीन को विज्ञापन, भैरूसिंह बेलवा व गोरख सिंह बापिणी को शिविर, महेंद्र सिंह गुजरावास को कार्यालय व रिकॉर्ड तथा लक्ष्मण सिंह गुड़ानाल व नखत सिंह बेदू को साहित्य वितरण का प्रभार सौंपा गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायण सिंह माणकलाव, विशन सिंह खिरजां तथा चैन सिंह बैठवास भी बैठक में उपस्थित रहे। इसी प्रकार जालोर संभाग की दो दिवसीय बैठक जालोर शहर में ईश्वर सिंह सांगाणा के निवास पर सम्पन्न हुई जिसमें केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा तथा संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान सभी स्वयंसेवकों को विभिन्न दायित्व सौंपे गए जिसमें अर्जुन सिंह देलदरी को हीरक जयन्ती मुख्य कार्यक्रम, महेंद्र सिंह कारोला को हीरक जयन्ती के निमित्त संभाग स्तरीय कार्यक्रम, ईश्वर सिंह साँगाणा को विशेषांक हेतु लेख, गणपत सिंह भँवरानी को विज्ञापन, ईश्वर सिंह देसू व खुमान सिंह दुदिया को साहित्य वितरण, महोब्बत सिंह धींगाणा को संघ तीर्थ दर्शन, दीप सिंह दूदवा को सोशल मीडिया, नाहर सिंह जाखड़ी को शिविर संबंधी प्रभार सौंपे गए। बीकानेर में भी संघ कार्यालय 'नारायण निकेतन' में दो दिवसीय संभागीय बैठक संभाग प्रमुख रेवन्त सिंह जाखासर की उपस्थिति में 16-17 जनवरी को सम्पन्न हुई। बैठक में राजेन्द्र सिंह आलसर को संभाग स्तरीय कार्यक्रम तथा साहित्य वितरण, खींव सिंह सुल्ताना को विशेषांक हेतु लेख, जोरावर सिंह भादला को नए क्षेत्र में विस्तार, रणवीर सिंह लखासर को शिविर संबंधी दायित्व सौंपे गए। इसी अवधि में जैसलमेर संभाग की भी दो दिवसीय बैठक शहर स्थित संघ कार्यालय 'तनाश्रम' में आयोजित हुई जिसमें संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा उपस्थित रहे। इस दौरान बाबू सिंह बेरसियाला को संभाग स्तरीय कार्यक्रम, रतनसिंह बडोडागांव को लेख, भवानी सिंह मुंगेरिया को विज्ञापन, तारेंद्र सिंह झिंझनियाली को साहित्य वितरण, देवी सिंह तेजमालता को विस्तार, नरेंद्र सिंह तेजमालता को विचार गोष्ठी तथा उम्मेदसिंह बडोडागांव को शिविर संबंधी प्रभार सौंपे गए। अन्य स्वयंसेवकों को भी विभिन्न दायित्व सौंपे गए। बालोतरा संभाग की बैठक भी इसी अवधि में संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी की उपस्थिति में वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास, बालोतरा में सम्पन्न हुई। बैठक के दौरान संभाग के चारों प्रान्तों के स्वयंसेवक उपस्थित रहे तथा हीरक जयन्ती वर्ष से संबंधित विभिन्न दायित्व ग्रहण किए। उपस्थित स्वयंसेवकों में से प्रत्येक ने संभाग के एक गांव की जिम्मेदारी लेते हुए वहां पर सम्पर्क कार्यक्रम तथा अन्य गतिविधियों के आयोजन का दायित्व लिया। पोकरण संभाग की बैठक भी 16-17 जनवरी को संभाग प्रमुख गणपत सिंह अवाय की उपस्थिति में सम्पन्न हुई जिसमें उपस्थित स्वयंसेवकों को विभिन्न जिम्मेदारियां सौंपी गई तथा वर्ष भर के कार्य की रूपरेखा निश्चित की गई। नागौर संभाग की दो दिवसीय संभागीय बैठक संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास की उपस्थिति में 23-24 जनवरी को कुचामन सिटी स्थित संघ कार्यालय आयुवान निकेतन में आयोजित हुई। महाराष्ट्र संभाग की संभागीय बैठक 26 जनवरी को सूरत शहर में आयोजित हुई। संभागप्रमुख नीर सिंह सिंघाना ने स्वयंसेवकों को हीरक जयन्ती से संबंधित विभिन्न दायित्व सौंपे।

संपादकीय

बल और बुद्धि का बंदी विवेक

किसी भी प्रकार के कार्य के संपादन के लिए बल की आवश्यकता होती है। बल के विभिन्न प्रकारों यथा शारीरिक बल, बुद्धि बल, साधन बल आदि की चर्चा होती रहती है लेकिन सामान्य अर्थ में शरीर के बल को ही बल नाम से उच्चारित किया जाता है और यहां इस आलेख के शीर्षक में जो बल शब्द का उपयोग किया गया है उसका निहितार्थ शारीरिक बल ही है। शारीरिक बल किसी भी कार्य के संपादन की प्राथमिक आवश्यकता है। बलहीन शरीर की बुद्धि व साधन भी सामान्य अर्थों में प्रभावी नहीं रह पाते। किसी विशेष परिस्थिति में बिरले ही लोगों में ऐसा संभव हो पाता है। संपूर्ण शरीर लकवाग्रस्त होने के बावजूद अपनी बुद्धि का पूर्ण उपयोग करने वाले स्टीफन हॉकिंग जैसे लोग तो बिरले ही होते हैं, शेष सामान्य लोगों के लिए तो शारीरिक बल ही प्राथमिक होता है। लेकिन प्रारंभिक होने के साथ-साथ यह पाशविक भी होता है। शरीर तो पशु के पास भी होता है और प्रायः मनुष्य की तुलना में अधिक मजबूत भी होता है लेकिन मनुष्य शरीर की स्थूल शक्ति को अपनी सूक्ष्म सत्ता के बल पर नियंत्रित कर लेता है इसीलिए वह पशुता से ऊपर उठता है लेकिन जिनके ऐसा नियंत्रण नहीं हो पाता उनका वह बल पाशविक बना रहता है और ऐसे लोग इस प्रारंभिक बल को ही सर्वोपरि मानते हैं। हमें समाज में ऐसे अनेक लोग मिल जाएंगे जो केवल मांसपेशियों की ताकत पर ही सब कुछ हासिल करना चाहते हैं। उनका पूरा जोर बाजूओं के दम पर रहता है और इसी के आधार पर वे विवेक को नकार कर क्रियाशील होते हैं। ऐसे लोगों की क्रियाशीलता समाज में पशुता के अलावा कुछ नहीं दे पाती। वे ऐसी तलवार होते हैं जिसका उपयोग किसी आर्त को बचाने की अपेक्षा मारने में अधिक होता है। ऐसे लोग उग्रता को ही एकमात्र उपाय समझते हैं और हर समस्या का हल अपने शारीरिक बल के माध्यम से करने में प्रवृत होकर समस्या को और अधिक पेचीदा बनाते हैं। ऐसे लोगों का नेतृत्व यदि किसी धूर्त एवं स्वार्थी व्यक्ति के हाथ में आ जाए तो वे उस व्यक्ति की उचित अनुचित आकांक्षाओं की पूर्ति के साधन मात्र बनकर काम करते हैं क्योंकि उचित अनुचित का निर्णय करने वाली विवेक शक्ति को तो वे पहले ही नकार चुके होते हैं, उसे अपने शारीरिक बल का बंदी बना चुके होते हैं। दूसरी श्रेणी के लोग अपने बुद्धि बल की श्रेष्ठता के घमंड में बावले हुए घूमते हैं। उनकी नजर में उनके छोटे से मस्तिष्क में समस्त संसार की समस्याओं के हल समाए रहते हैं और वे जो हल बताते हैं उसको स्वीकार न करने वाले का वे अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के बल पर पोस्टमार्टम करते ही रहते हैं। उनके अनुसार वे जो सोचते हैं वही सही है और इसके अलावा शेष सब गलत हैं। ऐसे लोग भी समाज को लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक पहुंचाते हैं क्यों कि उनका विवेक भी उनकी बुद्धि का बंदी बना रहता है। बुद्धि भी शरीर की तरह एक साधन मात्र ही है और वह अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए विवेक को नकारती है। विवेक को नकारने के कारण वे भी उचित अनुचित का निर्णय करने की क्षमता खोकर केवल अपने स्वार्थ के अधीन होते हैं और अपने उक्त स्वार्थ की प्रेरणा से अन्यों के शारीरिक बल को अपने उस स्वार्थ की पूर्ति में धूर्तता पूर्वक संलग्न करते हैं। ऐसे लोगों में यदि सामाजिक भाव का स्फूरण हो जाए तो वे शरीर, इन्द्रियों, मन और बुद्धि को संतुष्ट करने के लिए किए जाने वाले उद्यम को ही केवल सामाजिक काम मानते हैं और शेष सभी को नकारने के लिए प्रायः अपनी बुद्धि का तेल निकाला करते हैं। ऐसे लोगों की एक और प्रवृत्ति होती है कि जिस प्रकार इनका शरीर इनकी बुद्धि के अधीन होता है उसी प्रकार ये चाहते हैं कि समाज का समस्त बल, समस्त शक्ति, समस्त संगठन इनकी बुद्धि के अनुसार संचालित हों और ऊपर से तूर्रा यह होता है कि ये केवल सलाह देते हैं, करते धरते कुछ नहीं। सामने वालों को तो ये मूर्ख मानते हैं और अपेक्षा करते है कि वे सभी इनकी बुद्धि से संचालित हों। वे चाहते हैं कि समाज के किसी व्यक्ति पर होने वाले अन्याय का जवाब उसी की भाषा में दिया जाना चाहिए लेकिन वह जवाब देने वाला कोई और हो, समाज के अन्य लोग हों, समाज में पहले से काम कर रहे लोग हों पर कम से कम वे तो न हों, वे तो केवल सलाह देने मात्र तक सीमित हों और समाज का यह कर्तव्य हो कि वह उनकी बात माने। बुद्धि और बल से बलवान पर विवेक से अंधे ये लोग प्रायः कहते हैं कि धर्म, नैतिकता, मर्यादा, परम्पराएं आदि सब व्यर्थ की बाते हैं, इनके चक्कर में पड़ने की अपेक्षा येन-केन प्रकारेण, उचित अनुचित तरीके से भौतिक उपलब्धियों को ही हासिल करना चाहिए। इनके अनुसार राजपूत को क्षात्र धर्म की बात छोड़कर संसार में व्याप्त दस्यु वृत्ति को अपनाना चाहिए और लूट खसोट की प्रतिस्पर्धा में शामिल होकर झंडा गाड़ना चाहिए। इसीलिए प्रायः ऐसे लोग श्री क्षत्रिय युवक संघ से भी ऐसी ही अपेक्षा करते हैं। वे संघ को जानना नहीं चाहते, संघ की मानना नहीं चाहते पर दूर बैठकर संघ को अपनी विवेकहीन बुद्धि और पाशविक बल के सहारे चलाना चाहते है। लेकिन श्री क्षत्रिय युवक संघ ज्ञान प्रदीप्त हृदय का आंदोलन है। यह न तो विवेकहीन पाशविक बल की उपासना है और ना ही विवेक को नकार कर स्वयं की श्रेष्ठता सिद्ध करने वाली बुद्धि का अनुयायी है बल्कि ज्ञान से प्रदीप्त हुए हृदय से उपजी कर्मशीलता है जहां विवेक बल और बुद्धि का बंधक नहीं बल्कि नियंता होता है। जहां हर आग्रह के केन्द्र में समाज होता है और समाज के यथार्थ हित अहित को दृष्टिगोचर रखकर ही हर कदम उठाया जाता है। समाज जब तक ऐसे पाशविक बल और विवेकहीन बुद्धि को नकारेगा नहीं तब तक वह उस क्षत्रियत्व पर आरूढ़ नहीं हो सकता जो उसके अस्तित्व का हेतु है।

खरी-खरी

तांडव को रोकने से किसने रोका?

इन दिनों ओटीटी (इंटरनेट के माध्यम से वीडियो आदि प्रसारित करना) प्लेटफार्म पर आई वेब सीरीज 'तांडव' को लेकर तांडव मचा है। अपने आपको भारतीय संस्कृति के रक्षक कहने वाले लोगों की केन्द्र सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में विकसित हुई इस वेब सीरीज में कहा जा रहा है कि भारतीय देवी-देवताओं का अपमान किया गया है। भारत की समाज व्यवस्था के लिए आपत्तिजनक सामग्री प्रसारित की गई है। पूरे देश के तथाकथित संस्कृति रक्षक इस बेहुदा एवं शर्मनाक कृत्य के खिलाफ लामबद्ध हो रहे हैं और उस सरकार से इस प्रकार शर्मनाक करतूतों पर रोक लगाने को कह रहे हैं जिस सरकार में बैठे लोग भी इसी प्रकार के संस्कृति रक्षक हुआ करते थे। तब प्रश्न उठता है कि क्या उनकी वह संस्कृति संरक्षण की आग सत्तासीन होते ही क्षीण पड़ गई है? क्या उन्हें वोट देकर सत्तासीन बनाना पर्याप्त नहीं है ऐसे कृत्यों को रोकने के लिए, संस्कृति पर हो रहे इन विद्रुप आक्रमणों से बचाने के लिए आमजन को आंदोलनरत होना पड़ रहा है। सुना है उत्तरप्रदेश में ऐसे लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ है, पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने मुंबई गई है। मध्यप्रदेश सरकार में उसे प्रतिबंधित कर रही है तो क्या केन्द्र सरकार की शक्तियां उत्तरप्रदेश सरकार या मध्यप्रदेश सरकार से कम है? केन्द्र सरकार में बैठे लोग जिस संस्कृति की रक्षा की शपथ लेकर आज सत्तासीन हुए हैं क्या वह शपथ अब उनकी प्राथमिकताओं में से निःशेष हो गई है या फिर मुद्दे को उछालकर, कुछ गरमा-गरम टेलीविजन बहस करवा कर, कुछ जगह सड़के जाम करवाकर, स्वयं जैसे कुछ नए संस्कृति रक्षक पैदा करने के बाद केन्द्र सरकार की आंख खुलती है या फिर पहले से खुली हुई आंख को ही जान बुझकर बंद कर रखा है। आपकी संस्कृति रक्षा की इच्छा को वास्तविक मानकर जनता ने आपको एक बार नहीं दो-दो बार पूर्ण बहुमत के साथ अखिल भारत की संप्रभु सत्ता सौंपी है और आपको लगभग 7 वर्ष होने को है इस संप्रभुता को हासिल किए हुए लेकिन फिर भी भारत की महान संस्कृति पर तंत्र के बल पर हमले जारी हैं। आप जब सत्ता में नहीं थे तब सदैव पश्चिम परस्त पाठ्यक्रम पर प्रश्न उठाया करते थे लेकिन आज सात वर्ष की संप्रभु सत्ता के बावजूद आप एनसीइआरटी के पाठ्यक्रम को भारतीयता के वास्तविक स्वरूप को परिलक्षित करने वाला नहीं बना पाए हैं। क्या सात वर्ष का समय कम होता है इसके लिए? आपकी भक्त मंडली आज भी विजातीय संस्कृति के हावी होने का भय दिखाती रहती है और जनता से संगठित होने की बात करती है पर जनता ने तो एक बार नहीं दो बार आपको संगठित होकर वोट दिया है, सरकार में बैठाकर शक्तिशाली बनाया है फिर वह शक्ति संस्कृति पर होने वाले इन हमलों को क्यों नहीं रोक पा रही है? क्यों वही पुराना पाठ्यक्रम आज भी पढ़ाया जा रहा है जिसकी आप ही आलोचना किया करते थे? क्यों आज भी मनोरंजन माध्यमों द्वारा संस्कृति के स्वरूप को विद्रुप कर परोसा जाता है जबकि आप विपक्ष में रहते हुए तो इसके लिए बहुत खूंटे तोड़ा करते थे? आप वामपंथी संस्कृति को इसके लिए दोषी बताया करते थे लेकिन क्या आज देश का मानव संसाधन मंत्री कोई वामपंथी है? क्या आज देश का सूचना एवं प्रसारण मंत्री कोई वामपंथी है? क्या आज देश का गृहमंत्री कोई वामपंथी है? निश्चित रूप से ऐसा नहीं है फिर भी यह सब क्यों घटित हो रहा है? क्यों इस महान संस्कृति के मूल्यों का क्षरण रोकना आपकी प्राथमिकता नहीं है? आपके अंधसमर्थक प्रायः एक बहाना बनाते हैं कि अभी तक सिस्टम में पुराने लोग बरकरार हैं तो क्या ऐसे लोगों को बदलने के लिए सात वर्ष पर्याप्त नहीं है। आपके कुछ लोग कहते हैं कि सब काम सरकार ही थोड़े करेगी, जनता इनको नकारे तो यह सब नहीं होगा। लेकिन जनता को ही यह सब करना है तो फिर आप किस मर्ज की दवा हैं? आपको वोट किसलिए दिया है? आपकी संस्कृति समर्थक बातें सुनकर आपको वोट केवल इसीलिए नहीं दिए कि आप कुछ सड़कें और बना देंगे, कुछ रेल लाईन और बिछा देंगे या कुछ अस्पताल और खोल देंगे। यह सब तो रूटीन काम है और आपकी जगह कोई और आता तो वह भी करता, गति कुछ धीमी या तीव्र हो सकती थी। लेकिन आपकी संस्कृति समर्थक बातों में वह सब शामिल था जो आपसे पहले वालों के समय ठीक नहीं था और आज आपको सत्ता का सिरमौर बनाने के बावजूद भी वह वैसा ही रहता है तो आपको वोट देना बेकार है। ऐसे में यदि आप उस वोट को सार्थक सिद्ध करना चाहते है तो भारत की संस्कृति, भारत के इतिहास, भारत की जीवन शैली, भारत की शिक्षा और भारत के व्यक्तित्व में उस भारतीयता का समावेश करने का ईमानदार प्रयास प्रारंभ कीजिए जिसका विगत दशकों में षड्यंत्र पूर्वक क्षरण किया गया है। अन्यथा समय है गुजरते देर नहीं लगेगी। जैसे लगभग विगत 7 वर्ष बीते हैं वैसे ही आने वाले तीन वर्ष भी बीत जाएंगे और इसके बाद आप यदि भूतपूर्व हो गए तो करने को कुछ शेष नहीं बचेगा, सिवाय बातों के, जो आप पहले भी किया करते थे और आज भी करते हैं।

विद्यार्थी सम्मान समारोह

श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद में 13वां तेजस्वी विद्यार्थी सम्मान समारोह 24 जनवरी को वाघेला बोर्डिंग साणंद में आयोजित हुआ। जिसमें नरुभा वाघेला प्रमुख महाराणा व्याघ्रदेव एज्युकेशन ट्रस्ट साणंद, अशोक सिंह परमार नियामक श्री राजपूत आईएएस कैरियर अकेडमी गांधीनगर, धर्मेन्द्रसिंह वाघेला सेवानिवृत आईपीएस गुजरात पुलिस उपस्थित रहे। संस्थान, स्कूल, कॉलेज, मास्टर डिग्री और विशिष्ट प्रतिभाओं (बालक-बालिकाओं) को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में कई गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। संस्था के प्रमुख जितेन्द्रसिंह रेथल, मंत्री नवलसिंह पिंपण व सभी की मेहनत से कार्यक्रम को सफल बनाया।

शिल्पा को मिला शिक्षा में स्वर्ण पदक

बूंदी शहर की देवपुरा निवासी शिल्पा जादौन को कोटा विश्वविद्यालय से शिक्षा स्नातक में स्वर्ण पदक दिया गया। शिल्पा ने इस साल शिक्षा स्नातक में 87.42 प्रतिशत अंकों के साथ विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। शिल्पा के पिता दिलीपसिंह जादौन होमगार्ड में स्वयंसेवक है।

उग्रसेन जी की जयंती मनाई

शेखावतों की 'उग्रसेन जी का' शाखा के पितृ पुरुष उग्रसेन जी शेखावत की 445वीं जयंती 20 जनवरी को सीकर जिले के चला गांव में समारोहपूर्वक मनाई गई। समारोह के मुख्य अतिथि गोवर्धनसिंह दिवराला रहे व अध्यक्षता भवानीसिंह शेखावत ने की। उग्रसेन जी शेखावत समिति के अध्यक्ष जयसिंह समरथपुरा ने बताया कि कोविड-19 की गाइडलाइन के अनुसार हुए समारोह में स्थानीय ग्रामीणों के अलावा निकट के समाज बंधु भी उपस्थित रहे। वक्ताओं ने उग्रसेन जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बताया।

महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि मनाई

जोधपुर स्थित हणवंत राजपूत छात्रावास की शाखा में 21 जनवरी को महाराणा प्रताप की 424वीं पुण्यतिथि मनाई गई। दीप प्रज्वलन एवं वंदना के साथ प्रारंभ हुए कार्यक्रम में मोडसिंह भेड़ व मोतीसिंह फलसूंड ने महाराणा प्रताप के जीवन चरित्र के बारे में बताया। उनके जीवन संघर्ष से प्रेरणा लेकर सदैव आगे बढ़ने को उद्यत रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन शाखा के स्वयंसेवक मोहनसिंह गंगासरा ने किया।

शिविर सूचना

तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 13 से 15 फरवरी 2021
कामधेनु गिर गौशाला जेजूरी (मोरगांव बारामती रोड)
मेघ मल्हार हॉस्टल के सामने पूना, **मार्ग**-पूना स्वार गेट से जेजूरी के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है। मुंबई से भी सीधी बस है।
सम्पर्क सूत्र : रणजीतसिंह चौक 9923230825
मीठूसिंह सिवाणा 9822871347

प्रवेश चालू– सीधे 10वीं करें
- सरकारी ओपन बोर्ड से घर बैठे बिना **T.C.** किसी भी उम्र में आधार कार्ड से सीधे 10वीं करें।
- 10वीं पास सीधे 12वीं आर्ट्स, कॉमर्स, सांइस से करें।
- स्कूल छोड़े महिला, पुरूष के शिक्षित होने का अवसर।
- नर्सिंग, फार्मेसी करने के लिए सांइस से 12वीं करने का अवसर।
- 5,6,7,8,9वीं फेल या पास सीधे 10वीं करें। (NIOS कोड 170347)

NIOS भारत सरकार का सरकारी ओपन बोर्ड

आदर्श सीनियर सैकेण्डरी स्कूल
सोलंकियातला, तह. शेरगढ़, जिला जोधपुर
सांगसिंह समन्वयक
9783202923, 8209091787

सुप्रभात एकेडमी (आवासीय विद्यालय) सीकर (राजस्थान)
परीक्षाओं की विशेष तैयारी
सैनिक स्कूल | मिलिट्री स्कूल | नवोदय स्कूल | RIMC
Pre. Foundation Course | NEET | JEE | IIT | Class VI/VII/VIII Only
नोट : राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उ.प्र., म.प्र., गुजरात राज्यों के बच्चों के लिये उत्तम छात्रावास व्यवस्था उपलब्ध है।
For Admission
Class - 4 / 5 (Class -6 हेतु) (Age - 10 to 12yrs.)
Class - 6 / 7 / 8 (Class - 9 हेतु) (Age - 13 to 15yrs.)
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें।
दलीप सिंह
मो. : 9468588881

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

महारावल श्री बृजराजसिंह जी

यदुकुलभूषण भगवान श्रीकृष्ण की वंश परम्परा की जैसलमेर रियासत के
43वें छत्राला यादव पति महारावल श्री बृजराजसिंह जी
को उनके असामयिक देवलोक गमन पर हार्दिक श्रद्धांजलि।

हम भगवान श्रीकृष्ण से उनकी आत्मा को शाश्वत स्वरूप में विलय की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धानवत :

मदनसिंह करडा (सोढा टेंट हाउस, सम)	**नरेन्द्रसिंह सोढा** (पूर्व छात्रसंघ, अध्यक्ष)
आमसिंह जेठा	**जसवंतसिंह** सगरा
खेतसिंह सोढा जानसिंह की बेरी	**अमरसिंह** पारेवर

देशभर में उत्साह व श्रद्धा से मनाई संस्थापक श्री की 97वीं जयन्ती

(पृष्ठ एक से लगातार)

ऐसा जिनका संकल्प है, ऐसा जिन का त्याग है, वे ही समभाव में रहकर संघ का कार्य कर सकते हैं। यह कार्य तन सिंह जी ने किया, इसीलिए आज उनकी जयंती मनाई जा रही है।' इससे पूर्व संचालन प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास ने पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन वृत्तांत को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया। देशभर से समाजबंधुओं ने कार्यक्रम में जुड़कर अपने प्रेरणास्त्रोत के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। आलोक आश्रम, बाड़मेर में माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें शहर में रहने वाले समाजबंधु परिवार सहित सम्मिलित हुए। उन्हें संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि जयन्तियां उन्हीं की मनाई जाती है जिन्होंने समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। पूज्य श्री तनसिंह जी का ऐसा ही अमूल्य योगदान है श्री क्षत्रिय युवक संघ। 22 दिसंबर 2021 को संघ की हीरक जयन्ती के अवसर पर जयपुर में होने वाले कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए मैं आप सब को आमंत्रित करता हूँ। मातृशक्ति को भी मैं संघ से अधिक से अधिक संख्या में जुड़ने का आह्वान करता हूँ क्योंकि मातृशक्ति की सहभागिता से ही बच्चों में संस्कार निर्माण किया जा सकता है। वरिष्ठ स्वयंसेवक तथा शिक्षाविद श्री कमल सिंह चूली ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

बाड़मेर के सिवाणा में भी सुंदरिया बेरा पर पूज्य श्री की जयंती माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में मनाई गई। कार्यक्रम में उद्बोधन देते हुए उन्होंने कहा कि तनसिंह जी ने एक आदर्श क्षत्रिय का जीवन जीया और हम भी वैसा जीवन जी सकें, उसके लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में व्यावहारिक मार्ग प्रदान किया। उनकी प्रेरणा से हम भी इस मार्ग पर चल सकें, ऐसी प्रार्थना आज हम उनकी जयंती के अवसर पर करें। करण सिंह दुधवा ने तनसिंह जी के परिचय का वाचन किया तथा हिन्दू सिंह सिणेर ने कार्यक्रम का संचालन किया।

बाड़मेर संभाग के गुडामालानी प्रांत में पूज्य श्री तनसिंह जी के पैतृक गांव रामदेरिया में भी 26 जनवरी को माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में तनसिंह जी की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम को रावल त्रिभुवन सिंह बाड़मेर, बाड़मेर विधायक मेवाराम जैन, वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह चुली तथा तन सिंह जी की सुपुत्री जागृति कंवर हरदासकाबास ने संबोधित किया। 25 जनवरी को संघशक्ति, जयपुर में वरिष्ठ स्वयंसेवक दीप सिंह बेण्यांकाबास की उपस्थिति में पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने पूज्य श्री के प्रति अपनी कृतज्ञता उद्घाटित की। संभाग प्रमुख राजेन्द्रसिंह बोबासर से संचालन किया। 25 जनवरी को जोधपुर संभाग में कुल सत्रह स्थानों पर जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुए। केंद्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा की उपस्थिति में भेड़ व पीलवा में तथा केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा की उपस्थिति में केतु मदा में जयन्ती मनाई गई। शाखा कार्यालय प्रमुख महेन्द्र सिंह गूजरावास हनुवंत छात्रावास पावटा में, संभाग प्रमुख चन्द्रवीर सिंह देणोक जय भवानी नगर बासनी में, वरिष्ठ स्वयंसेवक चैन सिंह बैठवास तनायन जोधपुर में, भैरूसिंह बेलवा बापिणी में, पदमसिंह ओसियां - ओसियां गांव में, चन्द्रवीर सिंह भालु बेलवा राजगढ़ व मंगल बाल विद्यालय बेलवा में, सुमेर सिंह चौरड़िया सेतरावा में, मोती सिंह जेठानीया में, सांवत सिंह ऊचाईड़ा शिक्षक कॉलोनी चौपासनी में, लक्ष्मण सिंह जी गुड़ानाल विजयनगर चौपासनी में, गेन सिंह चांदनी गुरो के तालाब में, चैन सिंह साथीन - साथीन में तथा रघुवीर सिंह जी बेलवा ओल्ड कैंपस में आयोजित कार्यक्रम में सहयोगियों सहित शामिल हुए। बीकानेर शहर स्थित संघ कार्यालय नारायण निकेतन में भी जयन्ती समारोह का आयोजन हुआ जिसमें संभागप्रमुख रेवन्त सिंह जाखासर सहयोगियों सहित शामिल हुए। श्री करणी राजपूत छात्रावास नोखा में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई जिसमें प्रान्त प्रमुख करणी सिंह भेलू उपस्थित रहे। छतरगढ़ प्रान्त के मोतीगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में खींवसिंह सुल्ताना उपस्थित रहे। करणी छात्रावास (सरदार शहर) में भी जयन्ती मनाई गई। बीकानेर संभाग के गोकुल, रेडी, दसूसर, सूरतगढ़, नोसरिया तथा मिगसरिया आदि स्थानों पर भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। श्रद्धेय नारायणसिंह रेडा स्मृति स्थल पर भी मातृशक्ति द्वारा जयन्ती मनाई गई। कोलायत प्रान्त के आशापुरा गांव में भी जयन्ती मनाई गई। पूगल में आयोजित कार्यक्रम में चंद्रवीर सिंह गोकुल सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बालोतरा संभाग के कल्याणपुर प्रान्त में 19 जनवरी से 25 जनवरी तक पूज्य श्री तन सिंहजी जयंती महोत्सव सप्ताह का आयोजन हुआ। इस दौरान 19 जनवरी को थोब, 20 को कल्याणपुर, 21 को चारलाई कला, 22 को देमो की ढाणी, 23 को कांकराला, 24 को दईपड़ा खींचियान तथा 25 को रेवाडा जेतमाल में कार्यक्रम आयोजित हुए। इसी प्रकार बालोतरा प्रान्त में भी पूज्य श्री तनसिंह जयन्ती सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत 19 जनवरी को दाखां स्थित महादेव मंदिर में, 20 को आवासन मंडल स्थित श्री विवेकानंद उच्च माध्यमिक विद्यालय में, 21 को टापरा स्थित नागणेची माता मंदिर में, 22 को वेदरलाई गोपड़ी स्थित स्वर्गीय जालम सिंह सभा भवन में, 23 को वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास बालोतरा में, 24 जनवरी को वरिया स्थित सरस्वती बाल मंदिर में तथा 24 को सिणधरी स्थित मल्लीनाथ छात्रावास में कार्यक्रम आयोजित हुए। 25 जनवरी को जागसा स्थित नागणेच्या माता मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में जयन्ती सप्ताह की पूर्णाहुति हुई। इस दौरान प्रान्त प्रमुख राणसिंह टापरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। सिरोही जिले के चूली गांव में आयोजित जयन्ती कार्यक्रम में प्रांतप्रमुख सुमेर सिंह उथमण उपस्थित रहे। अमर सिंह चांदना ने कार्यक्रम का संचालन किया। सिरोही जिले के रेवदर स्थित राजपूत छात्रावास में तथा मांडाणी गांव में भी जयन्ती मनाई गई। जैसलमेर संभाग में भी अनेक स्थानों पर जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुए। जैसलमेर शहर स्थित जवाहिर छात्रावास में संभागप्रमुख गोपाल सिंह रणधा की उपस्थिति में जयन्ती मनाई गई। मोहनगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में भवानी सिंह मुंगेरिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। दवाड़ा में आयोजित कार्यक्रम को रतनसिंह बडोडागांव, अचल सिंह तथा बलवंत सिंह मूलाना ने संबोधित किया। झिनझिनयाली में आयोजित कार्यक्रम में शैतान सिंह ने पूज्य श्री तनसिंह का परिचय प्रस्तुत किया। रामगढ़ स्थित राजपूत छात्रावास में वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बेरसियाला की उपस्थित में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम को पूर्व विधायक छोटू सिंह, सम प्रधान तनेसिंह तथा गोरधन सिंह अर्जुना ने भी संबोधित किया। 26 जनवरी को बाबा बावड़ी में जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बेरसियाला तथा भवानी सिंह मुंगेरिया सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। तेजमालता में आयोजित कार्यक्रम को गिरधरसिंह जोगीदास का गांव तथा रावत सिंह रणधा ने संबोधित किया। इसी प्रकार शोभ, बरणा, बेरसियाला, म्याजलार, रणधा, पोछीना, इंद्रा कॉलोनी (जैसलमेर), मरुधरा आदर्श छात्रावास (देवीकोट) में भी जयन्ती मनाई गई। पोकरण संभाग के अंतर्गत पोकरण में तथा रामदेवरा नाचना प्रान्त के टावरीवाला में भी जयन्ती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख गणपत सिंह अवाय सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। बाड़मेर संभाग के चोहटन प्रांत में चोहटन तथा सेड़वा में आयोजित कार्यक्रम में महिपाल सिंह चूली, शिव प्रांत के शिव तथा धारवी कल्लां में आयोजित कार्यक्रम में रामसिंह माडपुरा सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। गुड़ामालानी प्रांत में गुड़ा मालानी तथा मीठड़ा में जयन्ती मनाई गई। गुड़ामालानी में कमल सिंह गेंहू सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। मीठड़ा में संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह रानीगांव ने कार्यक्रम को संबोधित किया। गडरा रोड प्रांत में गडरा रोड़, रामसर, गिराब व हरसानी में कार्यक्रम हुए। गिराब तथा हरसाणी में देवी सिंह माडपुरा तथा रामसर व गडरा रोड में प्रकाश सिंह भुरटिया सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

(पृष्ठ छह का शेष)

(पेज छह से लगातार) जगदम्बा पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, खंडप में भी तनसिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें संस्था प्रधान उम्मेदसिंह तथा गणेशा राम ने अपने विचार व्यक्त किए। नागौर संभाग में नागौर शहर में अमर राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई। इस दौरान मारवाड़ राजपूत सभा के नागौर प्रतिनिधि तेज सिंह बालवा तथा जब्बर सिंह दौलतपुरा ने पूज्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित

केतु

बापिनी

की। नागौर में ही कुचामन सिटी स्थित संघ कार्यालय आयुवान निकेतन में तथा छापड़ा गांव में पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई। शेखावाटी प्रांत में मीरा गर्ल्स स्कूल नाथावतपुरा सीकर व पिलानी में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। जालोर संभाग में जालोर शहर स्थित वीरमदेव राजपूत छात्रावास, दहिवा (सायला), अचलपुर (सांचोर), बागोड़ा, बेदाना, जसवंतपुरा, हरियाली, बोकड़ा, कवराडा, रानीवाड़ा में जयन्ती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुए। गोपाल छात्रावास भीनमाल में आयोजित कार्यक्रम को संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी, नाहर सिंह जाखड़ी, श्रवण सिंह दासपां व जनक सिंह जेरण ने संबोधित किया। अचलपुर में आयोजित कार्यक्रम को प्रान्त प्रमुख महेन्द्र सिंह कारोला, राव मोहन सिंह चितलवाना, गुमान सिंह माड़का, प्रेम सिंह अचलपुर ने संबोधित किया। बागोड़ा में सुमेर सिंह कालवा उपस्थित रहे। श्री नृपालदेव छात्रावास जसवंतपुरा में संभागप्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। पाली प्रान्त के सोजत मंडल में पाबूजी महाराज मंदिर शाखा गुड़ा चतुरा एवं बगड़ी नगर शाखा में तथा पाली मंडल के वीर शिरोमणि दुर्गादास छात्रावास में जयन्ती मनाई गई जिनमें प्रांत प्रमुख मोहब्बतसिंह धींगाणा, वासुदेव सिंह पाटोदा तथा हीर सिंह लोडता सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। रानी फालना मंडल की छोटी रानी शाखा में आयोजित कार्यक्रम को पाबूसिंह खरोकडा, अजयपाल सिंह गुड़ा पृथ्वीराज ने संबोधित किया। रायपुर मारवाड़ में पूज्य श्री की जयंती वरिष्ठ स्वयंसेवक छोटू सिंह जाखली की उपस्थिति में मनाई गई जिन्होंने तनसिंह जी के साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाए। कार्यक्रम को राजपूत सभा के अध्यक्ष भीमसिंह उदावत, बलवीर सिंह उदावत तथा प्रह्लाद सिंह उदावत ने भी संबोधित किया। खिंदारा गांव शाखा में भी जयन्ती मनाई गई जिसमें प्रान्त प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

डूंगरपुर में वागड़ क्षत्रिय महासभा ब्लॉक कांठल के तत्वावधान में अटल बिहारी वाजपेयी सभाभवन में पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती मनाई गई जिसके अंतर्गत कैरियर काउन्सलिंग कार्यक्रम रखा गया। उदयपुर में अलख नयन मन्दिर, अशोक नगर में भी 26 जनवरी को पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती तथा श्रद्धेय हरिसिंह जी रामपुरिया की पुण्य तिथि पर सत्संग का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को मेवाड़ मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा तथा संत ज्ञानानंद जी महाराज ने संबोधित किया। चित्तौड़गढ़ के सेंथी स्थित श्री क्षत्रिय सेवा संस्थान परिसर में जयन्ती मनाई गई। कार्यक्रम को संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली आदि ने संबोधित किया। गुजरात के मेहसाणा संभाग के पाटन मंडल के जाखाना गांव में जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें 7 गांवों के समाजबन्धु उपस्थित रहे। कार्यक्रम में धर्मेंद्र सिंह मोटी चंदूर व इंद्रजीत सिंह जैतलवासना सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। मेहसाणा प्रान्त में कलोल तहसील के वेडा गांव में भी पूज्य श्री की जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख विक्रम सिंह कमाणा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बनासकांठा प्रान्त के अंतर्गत पीलूड़ा शैक्षणिक संकुल, नेशनल हाईस्कूल धानेरा तथा चामुंडा माताजी मंदिर, मालण में भी जयन्ती मनाई गई जिनमें प्रान्त प्रमुख अजीतसिंह कुनघेर उपस्थित रहे। कराड़ा गांव में भी जयन्ती मनाई गई जिसमें भवानी सिंह माडपुरिया, रौनकसिंह, मनसिंह तथा वेदान्तसिंह ने विचार व्यक्त किए। मनोहर सिंह मिठौड़ा ने पूज्यश्री का परिचय प्रस्तुत किया तथा अजीत सिंह कुकनवाली ने कार्यक्रम का संचालन किया। कानेटी में आयोजित तीन दिवसीय शिविर के अंतिम दिन संभागप्रमुख दीवान सिंह कानेटी की उपस्थिति में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। मोरचंद, शक्तिधाम (सुरेंद्रनगर) तथा वल्लभीपुर में भी जयन्ती मनाई गई। सूरत की पद्मिनी शाखा में भी मातृशक्ति द्वारा जयन्ती मनाई गई। 26 जनवरी को सूरत के कोसमाडा गांव में जानकी वन फार्म हाउस में संभाग प्रमुख नीर सिंह सिंघाना की उपस्थिति में जयन्ती मनाई गई। कार्यक्रम को पाबूदान सिंह दौलतपुरा, रणजीतसिंह आलासन, भवानी सिंह माडपुरिया तथा खेत सिंह चांदेसरा ने भी संबोधित किया। मुम्बई में गूगल मीट पर वर्चुअल शाखा में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। मुंबई, मलाड व भायंदर शाखाओं में भी जयन्ती मनाई गई। दक्षिण भारत में केरल के तिरुवनंतपुरम तथा कर्नाटक के बैंगलोर में भी स्वयंसेवकों द्वारा पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। दावणगेरे (कर्नाटक) में आयोजित कार्यक्रम में गणपत सिंह जाखड़ी तथा गोपाल सिंह खेजड़ियाली ने पूज्य श्री की तस्वीरें तथा कैलेंडर का वितरण किया।

(पृष्ठ एक का शेष)

चुनौतियां... श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण शिविर कोरोना की बाधा के बाद पुनः प्रारम्भ हो चुके हैं, SKPF के सहयोगियों के लिए भी ऐसे शिविर लगाने को लेकर चर्चा की गई एवं शिविर के प्रस्ताव लिए गए। प्रतिदिन शाम 8.45 से 9.30 बजे SKPF के सहयोगियों के लिए लगने वाली वर्चुअल शाखा का लाभ लेकर संघ दर्शन को समझने में उसकी उपयोगिता को लेकर भी चर्चा की गई एवं सभी से नियमित जुड़ने का आग्रह किया गया। साथ ही विभिन्न विषय विशेषज्ञों एवं समाज के लब्ध प्रतिष्ठित लोगों के अनुभवों से अन्य समाज बंधुओं को लाभान्वित करने के लिए वर्चुअल वेबिनार्स आयोजित करने की योजना बनाई गई। सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग को लेकर विभिन्न सुझावों पर चर्चा की गई व इसका प्रभावी उपयोग करने के लिए आवश्यक तौर तरीके बताए गए। समाज में दिन प्रतिदिन होने वाली घटनाओं के प्रति SKPF की प्रतिक्रिया के बारे में चर्चा की गई एवं तय किया गया कि ऐसी घटनाओं पर ही सक्रिय होना है जिनसे पूरा समाज किसी न किसी रूप में प्रभावित होता है। व्यक्तिगत एवं आपराधिक घटनाओं पर प्रतिक्रिया में सावधानी रखने का निर्णय लिया गया। सभी जिला प्रभारियों से जिला वार कार्ययोजना बनाने के लिए कहा गया एवं फरवरी माह से उनकी क्रियान्विति प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया। बैठक में भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी राजेन्द्रसिंह आंतरी ने समाज के समक्ष नई चुनौतियों एवं उनसे संबंधित हमारी तैयारियों को लेकर अपनी बात कही। महेन्द्र प्रताप सिंह गिराब, यशवर्धनसिंह झेरली, श्रवणसिंह बगड़ी, आजादसिंह शिवकर, रामसिंह चरकड़ा, अरविन्दसिंह बालवा, महेन्द्रसिंह तारातरा आदि ने भी चर्चा में उपयोगी सुझाव दिए। माननीय महावीर सिंह सरवड़ी, लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास, गजेन्द्रसिंह आऊ आदि वरिष्ठ स्वयंसेवकों का बैठक में सानिध्य मिला। बैठक के उपरान्त सभी ने पूज्य तनसिंह जी की जयंती की पूर्व संध्या पर संघशक्ति में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान कर अपनी भागीदारी निभाई।

(पृष्ठ दो का शेष)

शिक्षक बनने.... -माशिबो की गणित की पुस्तकों से पाठ्यक्रम वाइज टोपिक पिछले पेपर की क्लिष्टता के अनुरूप। **पर्यावरण :** माशिबो की पुस्तके 6-12/लक्ष्य

शिक्षा मनोविज्ञान - माशिबो कक्षा 11-12 / प्रभात डॉ वंदना जादौन / अवनी प्रकाशन - धीरसिह / श्रैष्ठा- डॉ सुप्रिया गौड़

शिक्षण विधियां : फर्स्ट रैंक डॉ गरिमा रैवाड़ / एस. मंगल

विशेष : इन पुस्तकों के अतिरिक्त किसी अन्य पुस्तकों से आपने अब तक तैयारी की हैं तो उन्ही पुस्तकों से तैयारी जारी रखें। यदि आपने किसी कोचिंग के अच्छे शिक्षक से किसी भी विषय को अच्छे से तैयार किया हैं तो पुस्तकों के बजाय उसके क्लास नोट्स को वरीयता दे सकते हैं।

टेस्ट सीरीज का हिस्सा कब बनें: अपने पाठ्यक्रम का पूर्णतः रिवीजन करने के बाद अपनी तैयारी के मूल्यांकन के लिए आप पूर्णतः परीक्षा पैटर्न पर आधारित टेस्ट सीरीज का हिस्सा बन सकते हैं। टेस्ट सीरीज किसी विश्वसनीय संस्थान की ही ज्वाइन करें क्योंकि अक्सर भर्ती के समय में धनोपार्जन के लिए बिना पैटर्न को समझे कुछ कोचिंग संस्थान टेस्ट सीरीज आयोजित करवाते हैं जो तैयारी वाले अभ्यर्थी के लिए अनुकूल नहीं होती। इसके अतिरिक्त तैयारी के दरम्यान टोपिक वाइज टेस्ट सीरीज भी उपयोगी साबित हो सकती हैं।

योग्य मित्रों एवं अच्छे शिक्षको के सम्पर्क में रहे : यह समय आपके जीवन संवारने का समय है अतः इस समय को आभासी दुनिया के माध्यमों में जाया ना करें बल्कि अपनी ही तरह तैयारी करने वाले मित्रों के सम्पर्क में रहकर विषय विशेष पर चर्चा कर-के तैयारी को उत्तम रुप देने के साथ ही आस पास सकारात्मक माहौल तैयार किया जा सकता है। यदि पाठ्यक्रम से जुड़े विषय का कोई प्रश्न आपको समझ नही आ रहा है तो आप उस पर अपने मित्रों, अध्यापकों से चर्चा करें। इसके अलावा आप इसके लिए इंटरनेट का भी प्रयोग कर सकते हैं।

– **किशनसिंह वरिया** (रीट 2018 में राजस्थान में सबसे कम उम्र में चयनित)

नारायणसिंह खेजड़ोली को पत्नी शोक

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक नारायणसिंह खेजड़ोली की पत्नी **श्रीमती भंवर कंवर** का 16 जनवरी को देहावसान हो गया। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

श्रीमती भंवर कंवर

सज्जनसिंह धामोरा का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **सज्जनसिंह जी धामोरा** का 17 जनवरी को देहावसान हो गया। वर्तमान में जयपुर में निवासरत सज्जनसिंह जी अगस्त 1961 में जयपुर में आयोजित प्रा.प्र.शि. से संघ से जुड़े। उन्होंने अपने जीवन में कुल 69 शिविर किए। उनकी एकनिष्ठता प्रेरणादायी रही। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

सज्जनसिंह धामोरा

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री राघवेन्द्रसिंह देवड़ा

को पंचायत समिति रानीवाड़ा (जालोर)

के

प्रधान निर्वाचित होने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

श्री राघवेन्द्रसिंह देवड़ा

शुभेच्छु :

भूपेन्द्रसिंह, जाखड़ी

गंगासिंह, जाखड़ी

शुभेच्छु :

उम्मेदसिंह, डूंगरी

अर्जुनसिंह एन. सेवाड़ा

विक्रमसिंह, जाखड़ी

गणपतसिंह, जाखड़ी

पूर्णसिंह, जोड़वास

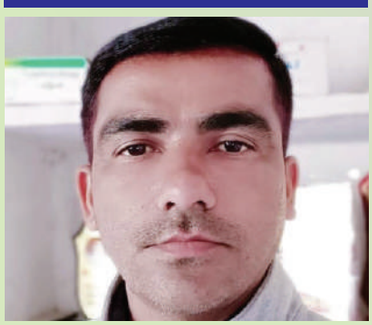

प्रतापसिंह, कागमाला

सूरजपालसिंह, सेवाड़ा

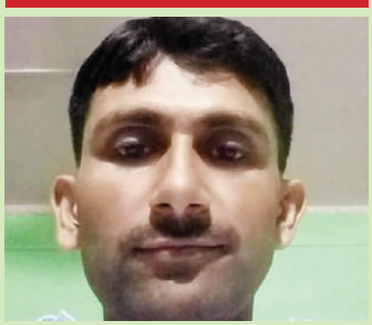

दिलीपसिंह, सुरावा

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org